संपन्नता का आधार
बाप और वर्से की याद

बाप की याद का महत्व हम सब ब्राह्मण अच्छी तरह से जानते हैं, मानते हैं और हर दिन अनुभव भी करते हैं लेकिन बाप की याद के साथ क्या हम स्वर्ग (वर्सा) की याद को उतना ही महत्व दे रहे हैं? यह हमें खुद से पूछना होगा। बाबा रोज़ की मुरलियों में नई दुनिया की तरफ अनेक बार हमारा ध्यान आकर्षित करवाते हैं लेकिन हम ब्राह्मणों की याद के लक्ष्य में नई दुनिया की स्मृति सामान्यत: कम ही रहती है। इसलिए यहाँ पर बाप की याद के साथ वर्से की याद (लक्ष्य) के महत्व पर विशेष प्रकाश डाल रहे हैं। आशा है इसे पढ़ने के बाद आप सब भी बाप की याद के साथ-2 वर्से की याद को भी उतना ही महत्व देंगे जितना बाबा हमें रोज़ की मुरलियों के माध्यम से दिलवाना चाहते हैं और निश्चित तौर पर हम अधिक तेजी से सम्पन्नता और सम्पूर्णता की ओर बढ़ेंगे।

- ❖ बाबा हमें कहते तुम्हारा सारा पुरूषार्थ है ही नई दुनिया में जाने के लिए, न कि मुक्तिधाम के लिए। तो बाबा को परमधाम में याद करने से आत्मा पवित्र बनेगी और नई दुनिया में दैवी पद को याद करने से उस दुनिया के गुण हममें आयेंगे। इसलिए बाबा की याद के साथ-2 नई दुनिया (वर्से) की याद भी परम आवश्यक है।
- ❖ बाबा हमें याद दिलाते हैं कि तुम्हीं देवता थे ताकि वे देवताई संस्कार इमर्ज हो, क्योंकि नये दैवी संस्कार बनाना असंभव ही है, वो केवल कल्प पहले की स्मृति और आने वाली नई दुनिया की स्मृति से ही इमर्ज होना संभव है।
- ❖ दुनिया में भगवान को सभी ही याद करते हैं लेकिन भिन्न-2 इच्छा के साथ। शिव बाबा हमें कहते है कि स्वर्ग की राजाई के लिए मुझे याद करो तो जब हम इस अर्थ को सामने रखकर ही शिव बाबा को याद करेंगे तब ही हमारे में दैवी गुणों की शक्ति आयेगी। नहीं तो जिस अर्थ के लिए बाबा को याद करेंगे, केवल वही अर्थ पूरा होगा न कि दैवी गुणों को धारण करने का।
- ❖ नई दुनिया व नई दुनिया में श्रेष्ठ पद को जितना अधिक स्मृति में रखेंगे उतना इस पुरानी दुनिया से बुद्धि स्वत: ही हटती जायेगी, जिसे बाबा बेहद का वैराग्य कहते हैं।
- ❖ नई दुनिया में आत्मिक स्मृति नैचुरल होती है तो नई दुनिया में दैवी पद की स्मृति से हमारी भी आत्मिक स्मृति नैचुरल होती जायेगी।
- ❖ स्वर्ग में दृष्टि, वृत्ति की पवित्रता नैचुरल है, तो स्वर्ग की स्मृति से यह विशेष गुण भी स्वत: इमर्ज होता जायेगा।
- ❖ स्वर्ग में सब व्यवहार में आते भी सब लगाव रहित लेकिन प्रेमपूर्ण होते हैं तो स्वर्ग की स्मृति से वही सब विशेषतायें हमारे मे आती जायेगी जो हम सब ब्राह्मण चाहते है।
- ❖ स्वर्ग में सब प्रकार की संपदा प्राप्त होते भी सब निरंहकारी होते हैं, तो जितना अधिक स्वर्ग को याद करेंगे उतना यहाँ भी हर प्रकार के व्यवहार में आते सहज ही निरंहकारीपन की विशेषता जागृत होती जायेगी।

❖ स्वर्ग में किसी भी प्रकार की हदें नहीं होती न ही मन की और न ही बाहरी रूप से, तो स्वर्ग की स्मृति से स्वत: सदाकाल की बेहद की भावना जागृत होती जायेगी।

❖ स्वर्ग में हर कोई सम्पूर्ण मर्यादित होता है, तो स्वर्ग की स्मृति से सर्व मर्यादायें स्वत: ही इमर्ज होंगी और उनका पालन सहज ही कर पायेंगे।

❖ स्वर्ग की याद से हल्कापन, खुशी और रॉयल्टी में तुरन्त वृद्धि होती है।

❖ **स्वर्ग की याद से तन और मन के स्वास्थ्य में तुरंत आशातीत सुधार होना शुरू हो जाता है।**

❖ हम सदा ब्रह्मा बाप समान बनने का लक्ष्य रखते हैं कि उन जैसे गुण धारण करें, लेकिन उनमें भी वह गुण, धारणायें शिव बाप और भविष्य पद की स्मृति से ही आये जो कि सारा वर्णन बाबा साकार वाणी में करते हैं। ब्रह्मा बाबा को याद करने से हमें उन्हों के गुणों का वर्सा नहीं मिलेगा, हाँ प्रेरणा मिल सकती है, गुणों का वर्सा नई दुनिया में श्रेष्ठ दैवी पद को याद करने से ही मिलेगा जैसे कि ब्रह्मा बाबा ने किया, **इसे ही 'फॉलो फादर' कहा जायेगा**।

❖ लक्ष्य की विस्मृति होने से ही पुरूषार्थ में अलबेलापन आता है क्योंकि लक्ष्य स्वत: ही व्यक्ति को पुरूषार्थ के लिए प्रेरित करता है। लक्ष्यविहीन व्यक्ति चाहे कितना भी श्रेष्ठ हो, लेकिन भटकाव में अवश्य आयेगा, इसलिए बाबा सबसे पहले हमें लक्ष्य देते हैं कि सूर्यवंशी बादशाही (वर्सा) लो।

❖ संगम का अर्थ ही है कि जब हम स्मृति से कलयुग छोड़ सतयुग की ओर चल पड़ते हैं माना जब हम सतयुग को स्मृति में लाते हैं तो हम उसकी ओर जा रहे हैं और कलयुग छूटता जाता है, इससे हम में संगम की सर्व विशेषतायें (बेहद का वैराग्य, दिव्य बुद्धि, शक्तियां इत्यादि) बढ़ना शुरू हो जाती है अन्यथा नहीं।

❖ बाबा कहते कि तुम्हारी माया के साथ युद्ध है जिसके लिए बाबा हमें भिन्न-2 युक्तियां, स्वमान, स्मृतियां, वरदान देता है, लेकिन माया से हमारी युद्ध भी तो केवल अपना राज्य (वर्सा) लेने के लिए ही तो हो रही है तो जिस कारण हम युद्ध कर रहे हैं, वह अभीष्ट लक्ष्य स्मृति में रहेगा तो इस युद्ध में हम सदा ही आगे बढ़ते रहेंगे, कहीं ठहरेंगे नहीं नहीं तो एक ही पडाव पर ठहरे हुए सालों साल युद्ध करते रहेंगे और विशेष प्राप्ति नहीं होगी।

नोट – मनन-चिन्तन द्वारा स्वर्ग की याद के महत्व पर और अधिक प्वाइन्टस् भी निकाले जा सकते हैं।

सार रूप में यही कहना चाहेंगे कि बाप की याद के साथ-2 जब स्वर्ग की याद तथा स्वर्ग में श्रेष्ठ पद पाने का लक्ष्य इकठ्ठा-2 रहेगा तो बहुत सहज रीति से और जल्द से जल्द हम सर्व गुण संपन्न बनते जायेंगे और सर्व ब्राह्मणों में यह एकमात्र लक्ष्य सदा जाग्रत करने से (भिन्न-2 विधियों द्वारा) सहज ही और शीघ्र ही यज्ञ संपन्नता तक पहुँचेगा और हम सहज ही समाप्ति का आह्वान कर बापदादा और विश्व की सर्व आत्माओं की सर्व आशायें पूरी कर सकेंगे।

तो आइये पुरूषार्थ की भिन्न-2 विस्तार की विधियों पर बहुत अधिक समय न देकर सार का पुरूषार्थ करें और स्वर्ग को और देवताई जीवन को साकार करें।

ऐसा न समझे कि केवल बाबा को याद करेंगे तो स्वर्ग तो है ही लेकिन नहीं, दोनों को इकट्ठा-2 याद अवश्य ही करना पडे।

आगे हम आपके सामने मुरलियों से लिए गए कुछ प्वाइन्टस् प्रस्तुत कर रहे हैं जिनमें आप पायेंगे कि बाबा बाप की याद के पहले या बाद में नई दुनिया (वर्से) की स्मृति को connect अवश्य करते हैं तो इसी प्रकार हमें भी अपनी याद के पुरूषार्थ में शिव बाबा की स्मृति के साथ स्वर्ग (वर्से) की स्मृति को भी अवश्य connect करना है।

मुरली से लिए गए प्वाइन्टस्

- **अल्फ** और **बे**
- **बाप** और **वर्सा**
- **मुक्ति** और **जीवनमुक्ति**
- **शांतिधाम** और **सुखधाम**
- **मन्मनाभव** और **मध्याजीभव**
- यह एक जन्म पवित्र बनने से भविष्य 21 जन्म तुम **पवित्र दुनिया** का मालिक बनेंगे। **बाप** जो विश्व का मालिक बनाते हैं ऐसे **बाप** को दिन-रात याद करना चाहिए।
- **बाबा** पूछते क्यों मिले थे? क्या पाया था? तो तुम कह सकते हो हमने **विश्व का राज्य** पाया था, उसमें सब आ जाता है।
- **बाबा** आये हैं तुम्हें **बेहद की ज़ागीर** देने, इसलिए **मीठे बाबा** को प्यार से याद करो।
- बाप, **शिव बाबा** से **वर्सा** मिलता है - याद आता है? बुद्धि मे आता है?
- बुद्धि में **ज़ागीर** आती है ना! यह **बेहद की बादशाही** तुमको उनसे मिलती है। वह है **बड़ा बाबा**।
- बच्चे जानते हैं कि हम **बाबा** के पास कल्प-2 आते हैं **बेहद का वर्सा** लेने।
- तुम समझते हो कि अब पवित्र बन **पवित्र दुनिया** का मालिक बनना है, हम राजयोगी हैं **बाप** से **वर्सा** जरूर लेना है।
- तुम्हारा है सबसे मुख्य पार्ट **बाप** के साथ जो तुम पुरानी **दुनिया** को **नई** बनाते हो।
- ईश्वर **बाबा दैवी राज्य** की स्थापना करते हैं तुम्हारे द्वारा, अकेले तो नहीं करते हैं। तुम मीठे-2 बच्चे **ईश्वर** के मददगार हो।
- **बाबा** पूछेंगे हिम्मत है ना **राजाई** लेने की, कहते हैं **बाबा** क्यों नहीं। हम पढ़ते ही है नर से **नारायण** बनने के लिए।

❖ साकार बाबा – बस **बाबा**, यह सब आप ले लो हमको तो **विश्व की बादशाही** चाहिए। तुम भी यह सौदा करने आये हो ना!

❖ तुम अभी समझते हो कि हमें तो **बाप** से **पूरा वर्सा** लेना है। याद बिगर सतोप्रधान नहीं बन सकेंगे।

❖ ज्ञान तो तुमको मिला है ना। **बाप** और **वर्से** को याद करो।

❖ तुम जानते हो कि **स्वर्ग** की अब स्थापना हो रही है **बाबा** आया हुआ है, यह ज्ञान वर्षा कर रहे हैं।

❖ राजयोग तो मशहूर है। **परमपिता परमात्मा** आकर राजयोग सीखाते हैं – **स्वर्ग** के लिए।

❖ यह सिर्फ तुम ब्राह्मण बच्चे ही जानते हो कि जिस **बाप** को पुकारते आये हैं वह हमको **बेहद का वर्सा** देने के लिए अमरकथा सुना रहे हैं।

❖ यहाँ **बाप** तुम बच्चों को सुनाते हैं – तुम **21 जन्म** के लिए कितने **साहूकार** बनते हो।

❖ तुम जानते हो **बाबा** हमारे लिए **स्वर्ग** लाया है। **बेहद के बाप** की सौगात है – **बेहद की बादशाही** अर्थात् सद्गति।

❖ तुम्हारी आत्मा कहती है कि हम ब्राह्मण हैं। **बाबा** से **वर्सा** ले रहे हैं।

❖ बच्चों को **बाप** बैठ समझाते हैं – जबकि **बेहद का बाप** सम्मुख है और उससे **बेहद का वर्सा** मिल रहा है।

❖ तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही **बेहद के बाप** से **बेहद का वर्सा** लेने की। वह है **सूर्यवंशी राज्य पद**।

❖ **बेहद के बाप** से **बेहद का वर्सा** लेते हैं तो **बाप** को याद करना चाहिए।

❖ **बाप** को याद करना है और **वर्सा** पाना है।

❖ तुम जानते हो – **बाप** से हम **21 जन्मों का वर्सा** पाने यहाँ हम आये हैं।

अंत में यही कहना चाहेंगे कि कम से कम 5 दिन बाप की याद के साथ-2 वर्से की याद का अभ्यास अवश्य करें और निश्चित तौर पर आप अपने में पहले से अधिक उन्नति महसूस करेंगे। इसके लिए आप एक छोटा सा चार्ट बना सकते हैं और 5 दिन बाद आप 5 दिन पहले की स्थिति से तुलना कर सकते हैं। निश्चित तौर पर आप बहुत अधिक इजाफा पायेंगे। चार्ट के पॉइन्टस् –

खुशी का लेवल
योग का चार्ट
योग की अनुभूतियाँ
अमृतवेले का सुख
मुरली का सुख

हम सब अपने सम्पन्न देवता स्वरूप को जल्द से जल्द प्राप्त करें, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ।

...ओम् शांति...